रियल–रिलेटिव पुरुषार्थ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

रियल चेतन तत्व है और रिलेटिव जड़ शरीर है। जड़ चेतन को जानना रियल रिलेटिव का ज्ञान है। पुरुषार्थ का अर्थ ही जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करना। आत्मा मूल रूप से सच्चिदानन्द स्वरूप है। आत्मा ज्ञाता और द्रष्टा है। शरीर के साथ आत्मा का संयोग कब हुआ इसको कोई नहीं जानता। यह संयोग पश्चानुपूर्वी है। आत्मा और शरीर अनन्तकाल से एक–दूसरे से जुड़े हैं। आत्मा और शरीर दोनों विजातीय तत्व हैं। दोनों का मिलन अज्ञान के कारण है। पुरुषार्थ रियल और रिलेटिव दो प्रकार का है। धार्मिक क्रियाएं रिलेटिव पुरुषार्थ हैं। यह मन, वचन और काया से जुड़ी हैं। मनुष्य पूर्वजन्म के भाव कर्म के अनुसार द्रव्य कर्म करता है। इसमें हम स्वतंत्र नहीं है। यह शरीर से जुड़ी हुई हैं।

रियल का अर्थ है वास्तविक और रिलेटिव का अर्थ है सापेक्ष। वास्तविकता और सापेक्षता दोनों साथ–साथ चलते हैं। विश्व में हर जगह इन दोनों की सत्ता है। संसार जड़ और चेतन दो तत्त्वों से मिलकर बना है। आत्मा चेतन तत्त्व है और जड़ पदार्थ गलन, मिलन धर्मा है। जड़ पदार्थ में सुख–दुःख की अनुभूति नहीं होती इसे पुद्‌गल कहते हैं। जड़ पदार्थ रूप, रस, गन्ध, स्पर्श से युक्त है। जड़ एवं चेतन के मिश्रण से संसार संचालित होता है। शरीर जड़ होने पर भी चेतन के कारण चलता है। मनुष्य एक सापेक्ष प्राणी है। चौरासी लाख जीवन यौनियों में सभी सापेक्ष हैं।

यह संसार पंचभूतात्मक है। पाँचों भूत वास्तविक हैं और सापेक्ष भी हैं। शरीर नष्ट होने पर पाँचों तत्त्व अपने मूल रूप में समाहित हो जाते हैं। प्रकृति और मानव सापेक्ष हैं। प्रकृति से हमें शुद्ध वायु मिलती है यदि शुद्ध वायु न मिले तो मानव जीवन चल नहीं सकता। हर जगह सापेक्षता दिखाई देती है। सम्पूर्ण सृष्टि वाइब्रेशन से संचालित हो रही है। द्रव गैस में बदलता है, गैस अन्य तत्त्वों में बदल जाती है। हर जगह सापेक्षता है।

आत्मा निरपेक्ष तत्त्व है। वह अजर अमर अविनाशी है। आत्मा सनातन सत्य है। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाउंगा? इन प्रश्नों के उत्तर के लिए आत्मचिन्तन करना पड़ता है। इन प्रश्नों का समाधान बाह्य जगत में नहीं बल्कि आन्तरिक जगत में खोजना पड़ता है। मैं कौन हूँ जब यह प्रश्न उपस्थित होता है तो आत्मा की सत्ता सामने आ जाती है। शरीर आत्मा नहीं है। शरीर जड़ पदार्थ है। मैं शब्द के द्वारा जिसका बोध होता है वही आत्मा है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। गीता में कहा गया है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नया वस्त्र धारण करता है वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि शरीर विनासशील है और आत्मा अविनाशी। शरीर को चलाने वाला आत्मा ही है

मानव जीवन में सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, लाभ–हानि आते जाते रहते हैं। यह सब सापेक्ष हैं। सुख के बाद दुःख, हर्ष के बाद विषाद और लाभ के बाद हानि का आना–जाना लगा रहता है। संसार परिवर्तनशील है। चक्र के पहिए की तरह ऊपर–नीचे होना इसकी गति है। प्रकृति में भी सापेक्षता देखी जाती है। ऋतुओं का बदलना, मौसम में परिवर्तन आदि क्रियाएं सापेक्षता के कारण ही होती हैं। हमारे जीवन में भी जो सुख–दुःख आता है वह भी कर्म सापेक्ष है। हमने पूर्वजन्म में जैसा कर्म किया है, वर्तमान जन्म में वैसा फल प्राप्त हो रहा है। अतः सापेक्षता का सिद्धान्त सर्वत्र लागू होता है।

मन, वचन और काया के द्वारा जो कुछ किया जाता है वह सापेक्ष है। हमने जो बोया है उसीका फल प्राप्त हो रहा है। बुद्धि कर्मानुसारिणी होती है। कुदरत संयोग जुटाता है। उपादान हमाने भीतर के कार्य हैं। उसका भुगतान करने के लिए हमें जीवन प्राप्त हुआ है। पूर्वजन्म में मैंने जैसा व्यवहार जिसके साथ किया था वैसा व्यवहार अगले जन्म में वह प्राणी हमारे साथ करता है।

कुदरत के कानून के अनुसार सुख–दुःख प्राप्त होते हैं। बिना कारण के कार्य नहीं होता। जैसा बीज बोया गया है वैसा फल प्राप्त होता है। आत्मा साक्षी है। आत्मा कर्मों का भोग नहीं करती बल्कि शरीर को भोगना पड़ता है। भारतीय संस्कृति पुरूषार्थ प्रधान संस्कृति है। हमें जीवन में सत्कर्म करने चाहिए। नये बीज कैसे डाले जायें? कर्म कैसे किया जाये? यह मानव के अपने

अधीन है। मन, वचन और काया शरीर आदि भोगने के लिए प्राप्त हुआ है। अतः ऐसा कार्य करना चाहिए कि जीवन में पश्चाताप न करना पड़े। जीवन अमूल्य है। अतः आत्मचिंतन करना चाहिए।

कारण–कार्य सिद्धान्त भारतीय दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है। यह सिद्धान्त सापेक्षता के आधार पर चलता है। बिना कारण के कोई कार्य नहीं घटित होता। कारण का अर्थ है कार्य का नियत पूर्ववर्ती होना। बादल के होने पर ही वृष्टि होती है। इसमें बादल कारण है और वृष्टि कार्य। कारण और कार्य सहवर्ती होते है। जैसा आदमी बोता है वैसा ही वह काटता है। जिसने बबूल का वृक्ष बोया है वह बबूल का वृक्ष ही काटेगा। जिसने आम का वृक्ष लगाया है वह आम के फल को ही प्राप्त करेगा। जैसा कारण रहेगा वैसा ही कार्य होगा। महान् व्यक्ति वहीं बनता है जो पुरुषार्थी होता है या पूर्वजन्म में अच्छे कार्य किया है। उसको इस जन्म में पुरुषार्थ का ही परिणाम मिल रहा है।